हरियर डोली

(छत्तीसगढ़ी काव्य संग्रह)

जयंत साहू

हरियर डोली

(छत्तीसगढ़ी काव्य संग्रह)

लेखक
जयंत साहू

प्रकाशक
नव उजियारा सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संस्था
रायपुर छत्तीसगढ़

लेखक
जयंत साहू

आवरण परिकल्पना
श्रीमती धनेश्वरी साहू

कम्प्यूटर ग्राफिक्स
उमेश साहू , विनोद सोनी

प्रकाशक
नव उजियारा
सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संस्था, रायपुर

प्रथम संस्करण- सन् 2016
सहयोग राशि- 150/ रूपये

सर्वाधिकार @ लेखकाधीन

द्वारा- जयंत साहू
ग्राम-डूण्डा, पो. सेजबहार, जिला-रायपुर (छ.ग.)
मो. 09826753304
Email-jayantsahu9@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्रं.	शीर्षक	पृष्ठ
१.	गांव	
२.	हरियर डोली	
३.	मेला मड़ई	
४.	नवा बिहान	
५.	जिनगी के भेद	
६.	करम	
७.	आवथे नवा बेरा	
८.	जक्काला	
९.	अंगार बोहे धरती	
१०.	कवांरा के गोठ	
११.	बिरहा के आगी	
१२.	दिन ढेवारी हे	
१३.	तिरंगा	
१४.	मनखे अबके	
१५.	नंगरिहा	
१६.	राउत दोहा	
१७.	मेला मड़ई के दिन	
१८.	फागुन	
१९.	करम के दोना	
२०.	मंझनिया	
२१.	आजा न बरसा	
२२.	अक्ति म भांवर	
२३.	तिहार के झड़ी	

क्रं.	शीर्षक	पृष्ठ
२४.	भुइंया के भगवान	
२५.	बधाई हो बधाई	
२६.	लुवे ला जावथे धान	
२७.	गोल बजार	
२८.	कइसन जमाना	
२९.	फागुन फगुनाई	
३०.	नेता के जात	
३१.	हमर गांव	
३२.	भादो के महीना	
३३.	काली के सुरता	
३४.	मंगनी जचनी	
३५.	छुनुर छुनुन नाचय बरखा	
३६.	संदेसिया	
३७.	जोत के बाती	
३८.	भरमाहा होगे नर तन	
३९.	मोर ढढरिया	
४०.	लोकतंत्र	
४१.	क्षणिक...जिनगी	
४२.	सियानी पै	
४३.	माटी के कुरिया	
४४.	छेरछेरा	

गांव

खपरा उपर खपरा जुड़े हे,
सरग निंसैनी कस छवाय छानी।
खदर छानी म घलो गजब बात हे,
पैरा-पैरा के ये तभो नइ चुहे पानी।।

छिटका कुरिया अउ गोबर लिपाये भुइया,
जिहा बिराजे कुल देवी।
कोला बारी म घलो गजब बात हे,
मांदा म बोवाय चेच अउ अम्मारी।।

गोररा कस खोली ल राज महल कहे,
सुखिया अउ दुखिया राजा-रानी।
गांव-गली म घलो गजब बात हे,
माड़ी भर चिखला ल गुंजन कहे नर नारी।।

हरियर डोली

हरियर–हरियर डोली म, मेहनत के फर लहराथे।
भाग जगा के खेती म, खेतहारिन ददरिया गावथे।।

मेड़ पार म परसा फुल, पुरवाही म लहरावथे,
चारो मुड़ा सतरंगी बादर, सरर–सरर गुनगुनावथे।
माथ नवाये धन्हा डोली म,
नंगरिहा ओनहारी जमावथे।।.....

लिप पोत के चतवारे बियारा, धन्हा डोली लुवावथे,
उल्हा–उल्हा दिखे ओन्हारी, खवइया मन लुभावथे।
मिंजा कुटा के कोठी म,
अब लछमी दाई समावथे।।.....

दाई बर लुगरा ददा ह धोती, मोरो बर कुरता बिसावथे,
तिहार बार म ठेठरी खुरमी, अउ मेला मड़ई घुमावथे।
नवा धान के चाउर म,
चिला दुदफरा खवावथे।।.....

मेला मड़ई

जोही बइला गाड़ी संभराना,
हमु मेला-मड़ई किंजर आतेन।
बड़ पावन हे कातिक पुन्नी,
हमु महानदी मे नंहा आतेन।।

भीड़ भड़क्का म धीरे हांकव गाड़ी,
दुरिहा रद्दा सुरता लेवा थोरी।
आनी बानी खजानी के होट होही,
मया के जिनीस बिसा के जोड़ी।
हमु मेला के मजा उड़ा आतेन। जोही...

संगी सहेली संग रईचुली चघे हे,
गजब डेलवा झुले के साध लगे हे।
टिकली फुंदरी ले मन बरे हे,
मया के माहूर ले पांव रचे हे।
हमु ढेलवा म झुल आतेन । जोही...

बिन चिनहा के हथेरी सुन्ना लागथे,
गोदना वाली के आरो मिलथे।
हाथ म हिरौंदी हीरा नाव लिखाथे,
माहर-माहर येकर इत्तर मिलथे।
हमु मया के चिन्हा गोदा आतेन। जोही...

नवा बिहान

सुनता के बिरवा ले जग म सूराज आही,
सुम्मत के दिया ले जग ह अंजोर पाही।
अबतो गांव–गांव म नवा बिहान आही।।

गांव–गली म घलो अक्छर गियान के जोत बरे,
एक हाथ म बइला नांगर दुसर म किताब धरे,
अड़हा अनपढ़ मनखे अब गीता रमायन गाही।
अबतो गांव–गांव म नवा बिहान आही।।

अंधविसवास अउ भरम के जाल मिटगे,
लड़का लड़की दूनो कुल के दीया बनगे,
समाज ले अब जात–पात के भेद भगाही।
अबतो गांव–गांव म नवा बिहान आही।।

खेती के सेती जागे हे सबके भाग आज,
नित–नियाव बर आगे हे पंचइती राज
अनधन के छांव ले अब गांव सुफल पाही।
अबतो गांव–गांव म नवा बिहान आही।।

जिनगी के भेद

जागेवं बिहनीया लाली सूरुज के चड़ती
अंगना म उड़ आइस दु चिरइया उड़ती
पिरीत के चोच लड़ई ले चिनहेव नर नारी
कभु डारा म उड़ बईठे कभु उड़य छानी
बिलमगेवं बुता म मैं देख के अनदेख।

बेरा बुड़ती लहूटेव अपन बसुंदरा
नजर म झुलगे काड़ी खुटी के खोंधरा
काड़ी-काड़ी जोर के सिरजाये हेबे पैरा
चहक-चहक के काहय सुघर हे डेरा
जान डरेव ये पंछी बनाहे अपन बसेरा
हरहिंछा होगवं मैं दिन अउ रतिहा अब।

दूसरइया बिहनीया फेर देखेवं वहू देखय
नर उठे त नारी, नारी उठे त नर राखय
मन मन म गुनेव का ओढ़र ये
खोंधरा ल सुन्ना काबर नई छोड़ये
मन नइ मानिस मैं झांक डरेवं
दाई ददा के पिरा ल मैं भांप डरेवं देख।

क्रमशः--

पारी-पारी अंडा ले पिला सेवत राहय
पल-पल महू खोधरा ल पासत रेहवं
गुंजगें अंगना नवा चाहक ले दु ले होगे चार
पांखी सवारे चारा चरावे करके मया दुलार
एक दिन उड़ागे चारो सुन्ना छोड़के अंगना दुवार
मया के माहल भोसकगे, मुठा ले झरगे रेत।
ये खोधरा ले जानेवं मैं जिनगी के भेद।।

जग रचइया बर मैं माटी
मोर बर सरी जग माटी
जान सुन के बनेवं परबुधिया
माया मोह के रूधेवं घरघुंधिया
अब जाय के बेरा काला लगाववं छाती
मोर बर तो सरी जग माटी।

करम

का करम लिखा के आए हव माथा म,
रेती कस झरत हे मोर मुठा ले।
काहि नइ सिजाएव अपन हाथ म,
तिही बनाए हस तिही मेटा ले।
ये जिनगी तो मेकरा के जाल होगे।
मिही बुनेव मोर बर काल होगे।।

धरम के तराजु म रुपिया चड़े,
देवता दरस म फिस मांगे पुजेरी।
मंदिर के आगु म मंदहा खड़े,
मोह माया धरे कइसे होववं बइरागी।
मोर सरधा के फुल नपाक होगे।
तन के ठुड़गा गुंगवा के राख होगे।।

तन के परदा ले झांके परोसी,
दुख दरिदरी म हांसे परोसी।
बइमान होके इमान सिखोवे परोसी,
मितवा बन के अनित करे परोसी।
रुंधे बर घरैदा बड़ देरी होगे।
खोंधरा उजारे पवन बइरी होगे।।

आवथे नवा बेरा

जय जोहार लेलो भइया, आवथे नवा बेरा के,
बच्छर पाछु भइगे, आगू बच्छर लेवथे फेरा।
मजा लेहन मजा लेबो नवा साल के,
आगे दू हजार आठ बारा बजती के बेरा।।

नसा पानी छोड़े के दिन हे
झगरा लड़ई टोरे के दिन हे
सुनता के संकलप धरे हे
सबो संगी मन परन करे हे
अबतो इही ओड़र म खुसी ल अगोरा।

देवारी कस फटाका फुटे
होरी कस रंग गुलाल उड़े
ईद सहिक सेवइया चुरे
बड़े दिन कस केक बटे
अबतो इहां बधइया देबो अउ लेबो रात पुरा।

पिरीत के फुल धरे बगीया तरी
अमरइया म किंजरे जोगनी परी
गर मिलके भुलाव रिस बइरी
गदर मताए के आगे हे पारी
अबो गुंजय गोहार मन भितरी ले मया पारा।।

जड़काला

हाय कइसन जड़काला तन मन ल जड़ा डारे,
कमरा हर छुटे ता गोरसी ल पोटारे।
अरे रतिहा ल का कहिबे दिन हा कपा डारे,
सुरुज तिर ठाड़े घाम ल जोहारे।।

ठुनठुनहा लागिस पोहाती वोदिन
कुनकुनहा आगिस घाम थोकिन
बुड़े नइहव तरिया म एकोदिन
अंगोझ डरेव तात पानी म थोकिन
हाय कइसन जड़काला पानी ल कठवा कर डारे। ...

बरी सुक्सी अउ खुला अब चुरय नही
अंगाकर संग बंगाला पुरय नही
साग भाजी ले बारी पलपलाही
तुरते ताजा अब भारी सुहाही
हाय कइजन जड़काला पोचवा ल फुलही कर डारे। ...

कुड़कुड़ाती धुका म भुररी बारे
माइ पिला सबो आंच सेंक डारे
चुलहा म लुकी थोरको नइ ठाहरे
रही रहीके बदरा म लुकी डारे
हाय कइसन जड़काला पछीना ल नोहर कर डारे। ...

अंगार बोहे धरती

अंगार बोहे धरती, अगिन बरसात पुरवाही।
तन होगे गोरसी, तिपइया लोरघत लुकाही।।

लू लगे के डर म, गोंदली बांधेवं गर म।
पनही बिना पांव म, भोंभरा जरेवं गांव म।
पानी पसीया के खंगता म, बिचारी गघरी सुखही।।

कमई धमई उसरे नही, पथरा होग माटी।
खंती के ढेला उपजे नही, पछीना पिये खेती।
मया छांव संग राहे नही, बईरी घाम सताही।।

सितलंग लागे घेरी-बेरी नहडोरी, तरिया घठौंदा नइ छुटे।
अतलंग पेट अमटाहा म जुड़ाही, सोरियात दही मही ल पुछे।
हरियर चारा होगे नोहराही, चेच अम्मारी सुहाही।।

कवांरा के गोठ

तोला देख-देख जिये के मन करथे जवांरा ,
फेर काबर जब-जब तोला देखथवं
मर जथवं कवांरा।

हिरदे म तही मोर सांस बनके धड़कथस ,
फेर काबर जब-जब मै सांस लेथवं
थम जथे ये जिवरा।

तोर आय ले संझा अउ जाय ले बिहनीया जानेवं ,
फेर काबर जब-जब तै आथस
ठाहरे नही ये बेरा।

सुते म तै जागे म तै समाये हस आखी भितरी ,
फेर काबर जब-जब तोला देखथव
लजाथे नयन बिचारा।

बिरहा के आगी

बिरहा के आगी मोर जीया जरोवथे।
रही-रही के सुरता तोर करेजा करोवथे।।

आसा के तरिया म मया डोंगा तउरथे,
बुड़ोबे के उबारबे मन ड़ोंगहार पुछंथे।
रही-रही के लाहरा मोर धीरज धरोवथे ...

बिते बिसरे तोर संग के बेरा नइ भुलावथे,
सुरता के पेड़वा हर सांस डोरी झुलावथे।
रही-रही के पावन मोर जिवरा डरोवथे ...

नयन के लिगरी म, दुनो नजन लड़थे,
सोन पुतरी परी अब, आसु बन के ढरथे।
रही-रही के आखी मोर, नरवा ढरोवथे ...

दिन देवारी हे

लिप पोते सुघ्घर भुवना, चउक पुरावत अंगना।
दिन देवारी हे कातिक महिना आरो देवथे सुवना।।

अलिन गलिन ले सखिया बटोरत,
तरिहर नाना तिरिया गावय।
घानी मुंदी झुमर पड़की नाचत,
अंजरी भर अन्न असिद पावय।
कुंभरा गड़े पड़की कड़रा डारे राखी
गोड़िन बोहे मुड़ म सखीया बारे दियना। दिन देवारी हे ...

गौरा चौरा म मोहरी बाजे।
चुंदी छरीयाए बइगीन झुपे,
सोटा मारत बइगा नाचे।
गउरा दुल्हा बउ गउरी दुल्हिन
सरी जग देखय मंगल लगना। दिन देवारी हे ...

गरवा बगराए खैरखा म
गहीरा पारय दोहा।
लउठी चलत अखड़ा डाढ़ म
सहाय करे साहड़ा देवहा।
राउत नाचे अहिर रउतइन लिपे ओरी
सोहई बांधे गर म गउ के होवे पुजन। दिन देवारी हे ....

तिरंगा

तिरंगा ओड़े रेगय धरती,
अहिंसा के पैडगरी म।
उच निच अउ जाति धरम,
बोह के एके गघरी म।।

जननी ले बड़े मोर जग महतारी,
जान लड़ाके जेकर करवं रखवारी,
जब विपदा आवे ठाड़े राहवं दुवारी,
जोइधा खोजत रेंगय धरती,
अहिंसा के पैडगरी म।

भाई ह भाइ ल झन जाहर पियाव,
नता रिस्ता के अपन करव हियाव,
पिरीत बन म बैर के बिरवा झन गड़ियाव,
मया बाटत रेंगय धरती,
अहिंसा के पैडगरी म।

हाथ जोरे हिन्दु मुस्लिम सिख इसाई,
संघरे सकलागे सुराजी बर दाई,
अइसन जाइधा ल कइसे भुलाई,
गौरव गावत रेंगय धरती,
अहिंसा के पैडगरी म।

मनखे अबके

पतियाय के लइक नइये कोनो मनखे अबके।
बघवा बनके बेटा मन दाई ददा ल हबके।।

नानपन म दुख पिरा ले पोसिस तेकर सुध नइये,
डेना पुदगा तोर जामगे त सियान के बुध नइये,
पढ़हंता मन तो पुरखा के चिनहा बरो दिस कबके।
पतियाय के लइक नइये कोनो मनखे अबके।

एक पतरी म बाट बिराज के खवईया,
अब होगे एक दुसर के मुह ले कावरा नंगइया,
भाई-भाई के झगरा म गोसइन घलो दांत चबके।
पतियाय के लइक नइये कोनो मनखे अबके।

अपजान ले जादा चिनहे जाने ह छलथे,
सिधवा के नकाब भीतर लबरा ह पलथे,
हितवा मितवा कस मीठ बोली ये तोर मतलबके।
पतियाय के लइक नइये कोनो मनखे अबके।

जिनगी अरथ बनगे धन दौलत कमाना,
सुख के खोजइ म कतका बदलबे ठिकाना,
गुमान म उड़इया एक दिन सुवा उड़ही सबके।।
पतियाय के लइक नइये कोनो मनखे अबके।

नंगरिहा

जाग नंगरिहा भाग जगा ले,
तोर दिन बादर आगे।
बदरी छागे रे ... बरखा आगे रे ...
असाढ़ तोर दुवार आगे।।

बड़े बिहनीया ले खेत-खार जाबे,
काटा खुटी बिन चतवार आबे,
कादी कचरा दुबी बन खेत ले मेड़ पार आगे।

लाली धौरा बइला ल चारा चराडर,
करीया भुरवा पड़वा ल मोटवा डर,
नांगर फंदाही तोर संग नंगरिहा के बत्तर आगे।

घुरवा के खातु कचरा पाल दे,
गाड़ी रावन के बिला भरका पाट दे,
बिजहा जमोडर अब बांवत तोर अधवार आगे।

सरी मंझनीया अरा ररा अरई गड़े,
खेतहारिन घाम ले रुखवा के छांव ठाड़े,
होगे बियारी के बेरा बासी वाली तोर लगवार आगे।

राउत दोहा

बन म गरजे बलखर बघवा,
कोठा म गरजे गोररईया।
खैरखा म गरजे राउत गहिरा,
कारी कुकरी देवे धुरपईया।।

दिन देवारी हे मोर लछमी मईया,
मैं खैरखा म लउठी भांजवं।
लान तेंदु साहर के लउड़ी भईया,
मैं पुरखा के मातर जागवं।।

मेड़ पार म तेलिन रेंगें,
भरका म रेंगें रउतइन।
गाड़ी रावन बरदीहा रेंगें,
हांकत ठाकुर के गइयन।।

दिन देवारी हे मोर देव गोबरधन,
मैं साहड़ा देव के गुन गाववं ।
लान मंजुर पांख के सोहईकरधन,
मैं पुरखा के मातर जागवं।।

रंग मताए दाउ दरागा,
छापर मताए गइयन।
अपन देवारी राउत मातेगा,
काछन निकलत दईहान।।

क्रमश:--

दिन देवारी हे मोर अखरा के बैताल,
मैं मोहबा के महमाई सुमरवं।
लान चवंर मड़ई के खड़ग ढाल
मैं पुरखा के मातर जागवं।।

चार महिना के चरवाही म,
दुध दही के चंडी जाथे।
दुहना छुटे दसराहा देवारी म,
घर घर माखन मिसरी खाथे।।

दिन देवारी हे मोर गउरा गउरी,
मैं कुलदाई के चरन पखारवं।
लान कुरुद हाट के कमरा खुमरी,
मैं पुरखा के मांतर जागवं।।

गाय गछिया ले कोठार भरय,
कोठी छलकय अंनधन ले।
किसन कन्हइया किरपा करय,
फलय फुलय अंगना असिद ले।।

दिन देवारी हे मोर दाउ सउंधीयागा,
मैं यदुवंसी के कुल दिया हरवं।
लान पाटन बजार के कोस्टउहा पागा,
मैं पुरखा के मांतर जागवं।।

मेला मड़ई के दिन

हाट बजार भरावथे ,मेला मड़ई के दिन आगे।
आनी बानी के जिनीस बेचाथे ,लेने देखे तेने मन आगे।।

करार दिन म मेला भराहे ,गांव–गांव म मुनादी होगे।
बरार सकेल के नाचा लगाहे ,काम बुता के मनाही होगे।।
धन जोरे धनी अगोरथे ,ठउका बेरा म नेवताहर आगे।

ओरी–ओरी ओरियागे ,पेठा जलेबी के ठेला।
रचरिच–रचरिच बाजथे ,रइचुली के मचुलिया।।
फुग्गा घुनघुना के पाछु ,नानहे लइका मन भागे।

जिद म अड़े हे बहुरिया ,ऐसो लेहू मै तो पैजनीया।
सास मुह टेड़वात काहय ,अउ के ठन पहिरबे नचनिया।।
माई पिल्ला बजार करे बर ,सियन्हा कर पइसा मांगे।

हिरा हिरैन्दी पेरम धरे ,एक दुसर बर चिन्हा लेवे।
कोनो देखे न कोनो पुछे ,भिड़ म धक्का के मजा लेवे।।
मया डेलवा के चड़ती म ,जम्मो सहेली सकलागे।

फागुन

रहस डंडा नांचथे सियाम राधा के रसिक।
सवांग धरे सखा गोपी गवाला के सरिक।।
गांव-गांव गोकुल बन बने हे बिरज।
रंग धरे आ फागुन तोला हे अरज।।

होरी लकड़ी बर खेत खार छान मारय
बारी बखरी के घला उदियान करय
अतलंहा खुटा खभर फइरका डारय
मस्तीयावत मन म अब नइहे धिरज।
रंग धरे आ फागुन तोला हे अरज।।

सरारा गावथे लइका सियान
सुनिहव फाग कबिरा देके धियान
झांझ मंजीरा संग म गुंजथे तान
घिड़कत टासा म नंगारा के हे तरज।
रंग धरे आ फागुन तोला हे अरज।।

गुलाल उड़ाये थरी भर-भर
रंग बरसाये पिचकारी धर-धर
सतरंगी होगे अब करिया बादर
सबला रंगव चिनहे के नइहे गरज।
रंग धरे आ फागुन तोला हे अरज।।

करम के दोना

किंजर के गली–गली म, मंय करम के दोना तुनथवं।
जिनगा बगरगे कोन गरेरा म, सुख के डारा पाना बिनथवं।।

नइ चाही धन दउलत, नइ मांगत हवं कपड़ा लत्ता।
भुख बाड़गे लइका के नंगत, पसिया पेज देवादे दाता।
कइसे गढ़हे हस भग ल, मंय अभागा के ताना सुनथवं।।

काबर आखी मुंदे बइठे हस, ये पथरा के भगवान।
मोला हे रोटी के आस, तोला भोग लगे खिर पकवान।
हाथ पसारे ठाड़हे, मंय परसाद म घला हिनावथं।।

कोन जनम के पाप रिहीस, काकर करजा छुटथवं।
कतका भुगतना लिखेहस, यम ल आज पुछथवं।
दया करव दयालू, मंय आठो पाहर तोर नाम गुनथवं।।

मंझनिया

लूक बरसावत आगे, झांझ झोला के मंझनियां।
पानी अटाही, आगी बरसही,
जीव जूड़ छावं बर तरसही,
अंगरा बरत जेठ बईसाख, संझा लागे न बिहनीया।।

बाहिर निकलने नई भाए, घर म ओईले नई जाए,
लटपट म बेरा ह कटाए,
अब तो तन होवथे राख, कतको राखव जतनिया।
अंगरा बरत जेठ बईसाख, संझा लागे न बिहनीया।।

ठुढ़गा दिखे पेड़वा, दुच्छा होगे भड़वा,
सूकखा हे नंदिया नरवा,
पनिहारिन घठौंदा राख, पानी पी जही मछरीया।
अंगरा बरत जेठ बईसाख, संझा लागे न बिहनीया।।

चाहके नही चिरईया, घुनखाय बईठे बिलईया,
उबुक चुबुक करे अमरईया,
निंद ल पहाती बर राख, सरी रात मारे छैलनिया।
अंगरा बरत जेठ बईसाख, संझा लागे न बिहनीया।।

आजा न बरसा

आए असाढ़ म धुररा उड़त हे,
गरज घुमर के बादर लहुटत हे।
आजा न बरसा सब गोहरावत हे,
टर-टर मेचका नरियावत हे।

जलरंग तरिया सुक्खा परे हे,
नंदिया नरवा नइ मारे थोकरो हिलोरा।
कुंवा के मछरी मुह फारे हे,
दिन भर चलत हे झांझ के झकोरा।
आजा न बरसा सब गोहरावत हे,
जर-जर जल अउटत हे।

घाम पियास म पंछी भटकत हे,
कांहा पावय जुड़ छांव।
सुक्ख गघरी पनिहारिन नहावत हे।
पनघट म पथरा नइ पावं।
आजा न बरसा सब गोहरावत हे,
मर-मर मानुस तलफत हे।

धान गहु कोठी म भुंजात हे,
खेती खार मांगय बिजहा।
नांगर गाड़ी ल घुन खावत हे,
भुख मरय बछर अपजसहा।
आजा न बरसा सब गोहरावत हे,
बन-बन म बनी भटकावत हे।

अक्ति म भांवर

चलौ अंगना दुवारी लिप के,
गज मोतियन चउक पुराबो।
पुतरी-पुतरा ल संभरा के,
चलौ अक्ति म भांवर पराबो।।

देखे रेहेन दीदी भाई के बिहाव,
फुफुहर चुलमाटी जावे।
नाचे कुदेबर बाजा लगावे,
ढ़ेड़हिन सुवासिन गीत गावे।।
चलौ बइगा घर चुलमाटी जाके,
ओली भर-भर माटी लाबो।

हरियर बांस के मड़वा गड़ाथे,
डूमर डार के मंगरोहन बनाथे।
झिन के मउर माथा म लगाथे,
हरदी पीस के तेल मिलाथें।।
चलौ बरतिया घरतिया बनके,
बिहतरा सगा सोधर सकलाबो।

पोरा चुकिया म भात रांधे,
डुवा डुवा पिपर पाना म परोसे।
टुरा ह कनिहा म नंगारा बांधे,
नोनी हर पुतरी के मउर सोपे।।
चलौ परा भर नेवता देके,
दाहिज बर टिकावन बईठराबो।

तिहार के झड़ी

सावन संग आगे तिहार के झड़ी,
धोवंव नांगर बक्खर अउ मचव गेडी।
आगे हरेली.... आगे हरेली.....।

नंगरिहा हर औजार ल सुमरत,
जांगर के आधार ल पुजय।
बत्तर बुलकगे बियासी अगोरत,
नागर के नाहना हर पुछय।
मेहनत संग बधे मितानी जोड़ी।
अन्नपुरना के अछरा हरियावत आगे हरेली.....

गेड़ी चड़के बठवा डंग-डंग बाड़त,
रचरिच-रचरिच पउवा बजाय।
माड़ी भर चिखला घुठवा म ठाड़त,
किचीर-काचर म पउरी बचाय।
लइका सियान बनावय खेल गुड़ी।
चिखला माटी के मजा लेवत आगे हरेली.....

सखरु बइगा सवनाही रेंगाही,
डीह डोगरी के देवता ल मनाही।
टोनही टमारिन मरघट जाही,
पाये बिदीया के परछो पाही।
आधारात मंतर मार चबाही जड़ी।
कोठा कुरिया म छरा देवत आगे हरेली.....

भुइया के भगवान

पथरा चिर के पानी ओगराथस,
पटपर परिया म अन उपजाथस।
भुखे रइके सबके पेट भरइया किसान,
मै महिमा गाववं तोर भुइया के भगवान।।

धरती के तही सिंगार करइया,
अगास ल निर्मल हवा देवइया।
चरा–चर जीव जगत के दुलरवा मितान,
मै महिमा गाववं तोर भुइया के भगवान।।

नइ डर्रावथस घाम पानी ले,
पालथस परवार पेट बनि ले।
करम जगाहे खेती म मोर गांव के सियान,
मै महिमा गाववं तोर भुइया के भगवान।।

धियान बिज्ञान के बनगेस ज्ञाता,
जबले जुड़िस अन्नपुर्णा ले नाता।
बिन स्कुल अउ मास्टर के पागे गियान,
मै महिमा गाववं तोर भुइया के भगवान।।

मन म नइहे गरब गुमान,
मेहनत माटी जेकर इमान।
तोर ले ये दुनिया हे सदा राख धियान,
मै महिमा गाववं तोर भुइया के भगवान।।

बधाई हो बधाई

बधाई हो बधाई नवा साल के रे भाई ।
सदी के दसवा अंजोर म नव के बिदाई ।।

सुख अउ दुख के रही आना जाना,
समय के फेरा म जिनगी हे बिताना,
ऐके आवत ऐके जात का के करलाई।
बधाई हो बधाई नवा साल के रे भाई।

गांव गली म नवा उमंग छाए,
नंदिया नरवा सोहर मंगल गाए,
फुले फुल ले गजब फुलवारी ममहाई।
बधाई हो बधाई नवा साल के रे भाई।

गला लगाव दिन दुखिया के दरद,
बड़ाव अपन भारत भुइया के गरब,
करनी करम के जग म होही बढ़ाई।
बधाई हो बघाई नवा साल के रे भाई

नवा बच्छर म नवा परन करव,
सदा सत अहिंसा के रटन धरव,
चलव इही संकलप के दिया ल जलाई।
बधाई हो बधाई नवा साल के रे भाई ।
सदी के दसवा अंजोर म नव के बिदाई।।

लुवे ला जावथे धान

लुवे ला जावथे धान, दाई धरके धरहा हसिया।
बियारी के बेरा आगे, भउजी बोहके पेज पसिया।
लइका बुड़वा सिला सिलहोवे, ददा हे बिड़ा बंधइया।।

भोर के लाली ले बुड़ती बेरा हर आगे,
दवई पानी नही पसीना म धान ह जागे।
नांगर के बइला भइसा दउरी म फंदागे,
बेलन के बछवा पैर ल खुरखुंद मतागे।
गाड़ा-गाड़ा पावथे धान, बबा हे कोठी धरे धरइया।

जतन बर पेड़वा के आठो पाहर खेत राखे हे,
अंगरी भर बीजा के मुठा भर कंसा फांके हे।
माटी ल महतारी अउ खेती ल संगवारी माने हे,
कीरा ल बईरी अउ करगा ल दुसमन जाने हे।
जग ल जिनगी देवथे धान, बाप पुरखा के हम कमइया।

तिवरा चना गहु अउ तिली सरसो के उतेरा,
नरई म चूनचूनिया, नरवा म मछरी के बसेरा।
मेड़पार म फुटू फुटे, पेरावट म छुछू के उकेरा
बखत म कमालव, फुरसद म खाहू बइठके होरा
सुख के दिन देवाथे धान, 'अपजस' मे गुनगान करइया।

गोल बजार

झन जाबे गोल बजार,
झुमे हाबे लुटइया हजार।
पांच के ल पंदरा लगाथे,
छुये भर ले झोला म धराथे।।

सबो जिनीस के भरमार हे,
जेती जाबे तेती भिड़ भाड़ हे।
देख-देख के आंखी चौधियाथे,
मोल भाव के चक्कर म ठगाथे।।

बजार के खरीदी नोहे सोहलियत काम,
लेवइया का जाने कतका हे सिरतोन दाम।
बोहनी बट्टा के बेरा कइके सुलिहारथे,
मीठ-मीठ बोली म थइली ल अलहोरथे।।

सोना चांदी अउ नव लखिया के हार,
असली नकली म नइये थोरको चिनहार।
देखते-देखत लेवइया के माल पलटाथे,
जाने म बिके माल वापस नी होवे बताथे।

तेल गुर ल तो महगाई खागे,
अब मिठाइ ल आरुग काहा पाबे।
दार चाउर म गोटी माटी मोवाथे,
अउ दम कर के लेबे त कांटा मराथे।

कइसन जमाना

सियान हर बोहे हे घर के बोझा,
जवान हर किंजरंथे ओधा-ओधा।
सुरताय के दिन म परंथे कमाना,
दुनिया म आगे हे कइसन जमाना।।

ठलहा रही फेर खेत आय नही,
कमाय के लइक ह कमाय नही,
का करे सियान ह घर हे चलाना।
दुनिया म आगे हे कइसन जमाना।।

पढ़हंता ह नांगर ल धरय नही,
घर दुवार बर चेत ल करय नही,
सोजझे म काहथे नौकरी देवाना।
दुनिया म आगे हे कइसन जमाना।।

सेखियावथे गली म बन ठन के,
चिक्कन चाकन खावथे हकन के,
उपराहा म सौ रुपिया थइलीम धराना।
दुनिया म आगे हे कइसन जमाना।।

पुचपुचावत हे बर बिहाव बर,
छांटथे गजब गोरी नारी उज्जर,
बरात बर कहिथे मोटर लगाना।
दुनिया म आगे हे कइसन जमाना।।

फागुन फगुनाई

मन झुमरे लागे संगी मोर, परसाही अमराई म।
मऊहा म लगे कोवा के फर, फागुन फगुनाई म।।

रूख राई नवा रूप धरे, सुखाय डारा पाना ल झराय।
कोंवर पीका फोकियाय परे, ठुढ़गा के दिन बहुराय।
कर ले मनभर के सिंगार, मांग महिना बिदाई म।।

सेमर डूमर फुलय रे, फुलत हे परसा के फुल।
आरो मिलय होरी के, टासा नंगारा रूमझुम।
उमियाए लगे गांव बस्ती भर, भांग मदराई म।।

रंग खेलत डंडा नाचे, राहस देखाय होले डांड़ म।
जम के गाए फाग रे, कबीरा के सरा ररा दोहा म।
पोताय हाबे सबो कोनो हर, रंग के रंगाई म।

मीत छुटे झन कभु रे, जुरे राहय प्रित के नता।
जर जए होरी रिस बैर के, छाहित राहय सुनता।
हॉसत राहे जीव उमर भर, झपाय झन रोवाई म।।

नाती बुड़वा के तिहार ये, तभे तो पिचकारी म रमे।
संगी जंहुरिया म करार हे, तभे तो गुलाल म जमे।
माते हे होरी भितरे भितर, ननंद भउजाई म।।

नेता के जात

पतियाबे झन भोला नेता के बात,
मुहे भर म मिठ गोठ पेट म हे दात।

ऐति ओती लड़ा के सबला जुझाही,
हमन लड़ मरबो नेता एक हो जाही।
असलियत देखाहि चुनइ के रात,
पतियाबे झन भोला नेता के बात।

मतलब बर ददा भइया कही,
तोर सुख दुख म अही जाही।
छोटे बड़े सबके जोड़ा थाबे हांत,
पतियाबे झन भोला नेता के बात।

गली गली म विकास के किरीया खाही,
दानी धरमी कस दुनो हांथ ले लुटाही।
मोहाथे सबला अपन महिमा देखत,
पतियाबे झन भोला नेता के बात।

जीते के बाद सबला अंगठा देखाही,
खावाहे तेला गिन गिन के उछरही।
मीठ लबरा होथे नेता ये के जात,
पतियाबे झन भोला नेता के बात।।

हमर गांव

का बतावव हमर गांव के बात,
बतावत ले बीत जही दिन रात।
चलना नजर म देख ले आज।।
का हे इहा खुसयाली के राज।

उत्ती मुहाटी म भेंट करे गौटिया,
चोंगी माखुर गठत धरे हे खटिया।
राम राम ले दुसर भाखा नइ बोले,
सबो बर मया कोठी के छबना खोले।
इहा एक दूसर बर मया हे घात,
का बतावव हमर गांव के बात।।

कुकरा जगाथे बडे फजर ले,
अंगना बुहारथे दाई गोबर ले,
बछरु के आरो म धउंरी जागिस,
दुहनी धरके पाहटिया ह आगिस,
गोरस ल ओगारत पैरा के खात,
का बतावव हमर गांव के बात।

भादो के महीना

गजब भागमानी हे बहिनी, भादो के महिना।
मइके म जुरियाही, डोकरी नेवरनिन कइना।।

खुसयाली बर मनाथे, गांव गांव म पोरा परब।
दुज के करू भात खाके, तिज म राखे बरत।।
मइके के सुख बर, निर्जला उपास हे रहिना।
गजब भागमानी हे बहिनी, भादो के महिना।

नंदीया बइला निकाल के, देव धामी म घुमाय।
पोरा चुकिया बिसा के, नान्हे लइका ल धराय।।
खेल खेल म सीखे नोनी, घर संसार म रहिना।
गजब भागमानी हे बहिनी, भादो के महिना।

हरहिन्छा के चार दिन, ससुरार के नइहे संसो।
लुगरा पोल्खा साया, रूंग रूंग के लेवा ले सबो।।
फरहार म पाबे सरी खुसी, महतारी के कहिना।
गजब भागमानी हे बहिनी, भादो के महिना।

ननपन के दिन लहुटे, ठट्ठा दिल्लगी म पोहाय बेरा।
जनम डेहरी छोड़के, चल देथे नोनी धरम के डेरा।।
नता ले नता नइ छुटे, आते जाते हे रहिना।
गजब भागमानी हे बहिनी, भादो के महिना।

काली के सुरता

काली के सुरता ल, काली म झन भुला देहू।
कइसे बीतिस दिन ह, छिन भर सोरिया लेहू।।

नवा दिन के उछाह म, रतिहा चमके जुगुर जागर।
चारो मुड़ा पुन्नी पुनवासा, मन होगे दू मन आगर।।
अवइया के पहुनाई म, जवईया ल बिदाई देहू।
कइसे बीतिस दिन ह, छिन भर सोरिया लेहू।।

कोनो पा लिस दस म, कोनो ह अगोरय गियारा।
दिन साल म का धरे हे, समय लेवथे अपन फेरा।
बदलत दिन देखके, रिस ल झन उतार देहू।
कइसे बीतिस दिन ह, छिन भर सोरिया लेहू।।

मेहनत ले एक राजा बनगे, एक होगे हे रंक।
राजा के खुशी बार न बांधे, रंक मताहे जंग।।
करम लेखा हाथ के, बच्छर ल झन दोस देहू।
कइसे बीतिस दिन ह, छिन भर सोरिया लेहू।।

निरासा म आसा भरे, उम्मीद के आस जगा लेबे।
भुले भटके मनखे ल, सुम्मत के रद्दा धरा देबे।
एसो के नवा साल, सबके बिगड़ी बना देहू।
कइसे बीतिस दिन ह, छिन भर सोरिया लेहू।।

मंगनी जचनी

बाढ़हे-बाढ़हे नोनी बाबू, होगे पारा भर म देखनी।
पुस सिरागे मांग ह आगे, कब होही मंगनी जचनी।

काम बुता म चटपट-चटपट, गोठ बात बर हे चटरी।
चाल चलन म गउ बरोबर, रंग रूप म हे सोनपुतरी।।
संसो म परगे दाई-ददा, सगा अगोरय नोनी ठगनी।
कब होही मंगनी जचनी...

गांव म नइये कोनो कुंवारी, संगी सहेली के होगे पठौनी।
काकर संग करवं हांसी ठिठोली, जवानी परय जुझउनी।।
बिहाव के हरदी कोरा छोड़ाही, छुट जही बहिनी अघनी।
कब होही मंगनी जचनी....

नता गोतर म बात बगरगे, चिज-बस ल देख के सगा उतरगे।
जमाना म धन लोभिया सचरगे, एकरे सेती गरीबिन बेटी छुटगे।।
दुलौरिन बर गठरी जोरवं, खाके बासी नून चटनी।
कब होही मंगनी जचनी.....

छुनुर छुनुर नाचय बरखा

चुरूर-चुरूर नाली बोहावे,
टिपिर-टिपिर चुहय ओरछा।
घपटे बादर मोती बगरावे,
छुनुर-छुनुर नाचय बरखा।।

हरियागे धरती करियाए ले बादर,
सरी जग लागय अब छलकत गाघर।
पटपर भुइया सिंगार सजा लिस,
कोवंर पिका उलहाए लागिस।।
मन भावन पावन मन डोलावे,
उमंग के फिलोवय फइरका।
खेती किसानी के दिन ओलहावे,
जेती देखे तेती चलय चरचा।।

पल म घाम अउ पल म छांव करै,
चंदा सूरूज घड़ी घड़ी नाच नाचावै।
बिजली चमके बादर गरजै,
खेतहारीन के जिया डरावै।।
कमरा खुमरी म नंगरिहा लुकावे,
रदरीद-रदरीद परय छकोरा।
नांगर बइला छापर मतावे,
परय बत्तर के सपेटा।।

क्रमश:--

भुलुक भुलुक बिला ने झांकत केकरा,
दलदली ल छोड़ खोजत हे डिपरा।
टोटा बुड़उ ले उफ्लावत हे मेचका,
ससन भर भरगे डबरा अउ खचका।।
छिपछिपा धारी म मछरी भगावे,
तरिया के भोरहा आगे भरका।
पेलना अउ चोरिया मोरी दतावे,
कहां भगाबे बोचके तै छापा।।

सत संग ले सत गति मिलही
पुरूष ले होबे महापुरूष
ज्ञानी के सीख ल हंसा बनके धर
वो दुनियां ल सूरूज बनके अंजोर करिस
तै दीया बनके घर ल तो अंजोर कर।

संदेसिया

संदेस धरे कउवा आगे हे तोर छानी।
पहुना अवइया हे लोटा म देदे पानी।।

रोई-रोई के काजर धोवथे सजनी,
परदेस ले आ जबे सईया।
झांक-झांक के मुहाटी ले उड़थे ओड़नी,
तन मन ल छुवथे पुरवईया।।
दीदी के आस बाड़गे ,
भउजी के सांस माड़गे।
सुन डरिस संदेसिया सुवना के बानी।
पहुना अवइया हे लोटा म देदे पानी।।

तोर कोरे गांथे बांधे चुंदी उझरगे,
रही-रही के बेनी ल अईठे।
घेरी बेरी रचई म लाली बगरगे,
कलेचुप नई ये सम्हर के बईठे।।
सिंगार म अउ खंगे हे,
दरपन म दोस लगे हे।
देख डरिस अटरिया ले आवत नोनी।
पहुना अवइया हे लोटा म देदे पानी।।

क्रमशः--

सुरता म तोर संग बन डोगरी गएवं,
डारा पाना मन हर साखी हेबे।
तोर सुरता के मारे कातिक नहाएवं,
पहाती के सुकवा झन दगा देबे।।
आगे मन के मित,
गाबो पिरीत के गीत।
बाहा म भर ले चाहे हो जए नदानी।
पहुना अवइया हे लोटा म देदे पानी।।

सरकी पिड़हा दसा के आसन बनाएवं,
भोजन बनाएवं तोर मन के।
आवत खानी गहना गुठा लेवत आतेव,
निकलतेवं गली म बन ठन के।।
नाक बर नथनिया,
पांव बर पैजनीया।
लान लेहा राजा बाट जोहथे रानी।
पहुना अवइया हे लोटा म देदे पानी।।

जोत के बाती

लक लक लक तोर खप्पर बरे।
दाई जोत के बाती नव रूप धरे।। ...लक लक लक..
कभु दुर्गा कभु गौरी...
कभु कालका, कभु चंडी अवतरे।।

बदना के फुलवारी, तोर दुवारी।
मनौती के अरजी, धरे नर नारी।
कभु ज्योति कभु जवांरा...
कभु लिमवा, कभु मारन मारे।। ...लक लक लक..

जस म बिधून हे तोर लंगुरवा।
दाई-दाई चिल्लावथे दुलरवा।।
कभु सांग कभु बाना...
कभु सोटा, कभु बम किलकारे।। ...लक लक लक..

नव दिन नव राती जो सेवा बजाए।
शीतला महमाया के आसिस पाए।।
कभु दुख कभु दरिदरी...
कभु संतन, कभु दर्शन दे डारे।। ...लक लक लक..

भरमाहा होगे नर तन

भरमाहा होगे नर तन, चिटिक बात म अगन हो जाथे।
नता रिस्ता के भरोसा, दाग लगते म दफन हो जाथे।।

नियाव म नित नइये, नर से होय त भोरहा कहाथे।
नारी आय त पापिन, कुटुम बर कुलछनीन हो जाथे।।
भरमाहा होगे नर तन....

परके नियत झांक, खरबइता अपने नियत डोलाथे।
अपन चरितर ढांक, पर बर दांत खिसोरन हो जाथे।।
भरमाहा होगे नर तन....

बेटी बहिनी महतारी, मानत काबर जियान पर जाथे।
देहे देंह रूप चरित्तर, माया बर काया हरन हो जाथे।।
भरमाहा होगे नर तन....

तिरिया मांस देखे, ऊंचहा नाक घलो कटा जाथे।
मरहा खुरहा बुढ़वा, मौका पाके दुसासन हो जाथे।
भरमाहा होगे नर तन....

कइसे बचाववं मान, सरी भसम कर जाए के मन करथे।
मैं तो जननी आवं, इही सोच के सराप बरदान हो जाथे।।
भरमाहा होगे नर तन....

लहू के कतरा जमोय, कोख म नौ महिना जतनथे।
जीव होम बियाथे, पीरा सोच जयंत नमन हो जाथे।।
भरमाहा होगे नर तन....

मोर ददरिया

मोर ददरिया रोवे, जाने कोन करार म।
चिन्हा परे हे, ये दर्री के कछार म।
नंदियां होगे वो–नंदियां होगे रे, तोर आसु के धार म।।

जिनगी हाबे फेर जान नइहे, आंखी म तोर बिन अऊ आन नइहे।
परे हाबे पथरा कस परान धरे, तोर बिन अब जीये के नइ मन करे।
मोर ददरिया जीये, जाने कोन आस म।
सांस अरझे परे हे, हिरदे के फांस म।।
नंदियां होग ...

मया भागागे मोर बिन पांव के, पता लिखवं येमा कोन गांव के।
जा रे चिठिया तहीं खोज खभरिया, कोन देश म बिहागे रे सावरिया।
मोर ददरिया खोजे, जाने कोन बांट म,
खत लटके परे हे, ये बंबूर के आंट म।
नंदियां होग ...

पकिया पिरित ल कइसे भरम जानवं,
दोसदारी के दगा ल कइसे करम मानवं।
जिनगी उजार के तै घर बसालेस,
लहू के लाली ल माहूर बनालेस।
मोर ददरिया दिखे जाने कोन कांछ म,
जिया जरत परे हे, ये सेंदुर के आंच म।
नंदियां होगे वो–नंदियां होगे रे,
तोर आसु के धार म।।

लोकतंत्र

चुनई के बेरा खाए किरिया, कुर्सी म बइठते भुला जाथे।
लोकतंत्र म नइये भरोसा, चोरहा लबरा घलो चुना जाथे।।
चुनई के बेरा खाए किरिया .....

बोकरा भात अध्धी पउवा, नोट धरा दिस अऊ सउवा।
बिसाये वोट गलाके पइसा, पांच साल म सबे छुटा जाथे।।
चुनई के बेरा खाए किरिया .....

चुनई नहां के धो डरिस, चोरी चमारी झुठ लबारी पाप।
मन के मइल धोवाही कांमा, घठौन्दा घलो तो बेचा जाथे।।
चुनई के बेरा खाए किरिया .....

अक्कल नइहे नतो बुध, पढ़ई म रिहीस निच्चट भोकवा।
नेता के सोहबत म बनगे नेता, संसद म जाके उंधा जाथे।।
चुनई के बेरा खाए किरिया .....

पर के बाना मार खवइया, धरमी दयालु जन सेवक कहाथे।
देस के सच्च सेवा करइया, जंती बर चंऊक-चौरा टंगा जाथे।।
चुनई के बेरा खाए किरिया .....

अब पछताए ले का होही,हमला तो रहना हे ओकरे सरन।
लात मारय या पुचकराय, दिन म मोहनी जड़ी खवा जाथे।।
चुनई के बेरा खाए किरिया .....

क्षणिक.. जिनगी

उवत-बुड़त
हमर-तूहर वोकर
भितिया म माड़े चिमनी
सरलग बरत-खपत
रहि-रहिके उपरसस्ती लेवथे
लागथे संग नइ दय पोहाती के
अभिच-तमही भुतइया हे
आस हे तभोच ले
लामे हे तब-तक बरही
ताकत बर अंजोरही
अरे, ये-ये एल्ले
होगे झप ले
आंखी-आंखी देखती
डगमिक-डगमिक डोलिस
भभक-भभक के बोलिस
जिनगी अइसनेच होथे
मोर होवय
चाहे तूहर।

सियानी पै

नाहना बिगर बुलक जथे जुड़ा,
टेकनी बिगर उलर जथे धुरा,
बंधना बिगर बोचक जथे मुड़ा,
जतनी बिगर बिगड़ जथे टूरा।

मेछरावत पड़वा म मुरक्का मार,
हरहा गरवा म गरलगी डार,
थरहा बचाना हे त गोहड़ी बिदार,
बेहरवा टूरा ल तुरते सुधार।

अदरा ल सिखे पढ़े के संगत धरा दे,
निसंसो होके सगा घर लउठी मड़ा दे,
बाढ़हे-खोचे उमर हे त मड़वा गड़ा दे,
खुटा अरझा के टूरा के चेत चड़ा दे।

माटी के कुरिया

सुख नइ पायेवं दू घड़ी,
दुमंजला महल भीतर म।
थिरा लवं का दाई थोकुन ?
माटी के कुरिया अउ खदर म।।

जाड़ म कपासी मरथवं,
घाम म पछनाय परथवं।
भिंसरहा के भटकत सझौती आवं,
रतिहा चंदौनी के अंजोरी नइ पावं।
कोन जनी कब का हो जही ?
दिन गवायेवं इही डर म।
थिरा लवं का दाई थोकुन,
माटी के कुरिया अउ खदर म।।

तेलई म घर के लासा डबकगे,
रंग के पोतई म तिजौरी खसकगे।
सीड़िया चड़ाई म सियनहा बरसगे,
गरवा परसार म मेछराए ल तरसगे।
काकर बुध म गांव छोड़ी ?
लघियात आ बसेवं सहर म।
थिरा लवं का दाई थोकुन,
माटी के कुरिया अउ खदर म।।

नहाय के खोली खाय के खोली।
बखत परे म बाहिर बट्टा होली।
अंगना में खोजवं तुलसी के बिरवा,
चौरा ओसही म पिपर के पेड़वा।

कइसे के बिसरजवं सुरता ?
खड़े ईटा पथरा के अधर म।
थिरा लवं का दाई थोकुन,
माटी के कुरिया अउ खदर म।।

संझा बिहनियां ल बिजली बनाही,
पंखा बगराही पवन कस पुरवाही।
अमरइया के हावा मुंदा जाही का,
एक दिन चंदा सुरूज लुका जाही का।

लहुट आते का बिते बेरा ?
लुकालेतेवं सुरता ल नजर म।
थिरा लवं का दाई थोकुन,
माटी के कुरिया अउ खदर म।।

मम्मी डैडी म दाई ददा ल भोरहा होथे,
टी.बी. रेडियो के सेती गीता रमायन रोथे।
पठेरा आंट मचान के खटिया उसलगे,
सोकेस अउ सोफासेट मार्बल म फिसलगे।

अब जी ले डर का जमाना ?
हफरगेवं ये डामर के डगर म।
थिरा लवं का दाई थोकुन,
माटी के कुरिया अउ खदर म।।

छेरछेरा

माई कोठी के छबना अब हेर डरा।
आगे अन्नदान के महापरब छेरछेरा।।

मेहनत मोल्हा दान अमोल,
दिये हे देवता गठरी खोल।
मगई अउ देवई दूनो धरम,
पुस पुन्नी के गजब मरम।
गरीबहा बड़हर उमियाए पुरा।
आगे अन्नदान के महापरब छेरछेरा।।

घर के मुहांटी खड़े गौटनिन,
धर के सुपा-चरिहा भर धान।
ठोमहा-खोचि सबो ह पावय,
काकरो म नइये जिछुट्टई पीरा।
मुठा-मुठा म नइ गवांवय हीरा।
आगे अन्नदान के महापरब छेरछेरा।।

झोके बिगर टरय नही,
दान बर घलो घेखराही।
धरमिन थोरको चिचियाए नही,
परब बर माई कोठी उरकाही।
छेरछेरा के गीत गुंजय आरा पारा।
छेरिक छेरा छेर मड़ई के दिन छेरछेरा।
आगे अन्नदान के महापरब छेरछेरा।।

परिचय

नाम - जयंत साहू
पिता - श्री अमरसिंह साहू
माता - श्रीमती पार्वती साहू
योग्यता - स्नातक
- लोक संगीत डिप्लोमा
- छत्तीसगढ़ी भासा अउ साहित्य म डिप्लोमा
- पी.जी. डिप्लोमा इन पत्रकारिता
- नैमित्तिक कंपेयर दूरदर्शन, रायपुर छ.ग.
- वार्ताकार आकाशवाणी, रायपुर

रंगकर्म - चित्रोत्पला लोक कला परिषद, रायपुर
- पुष्पक मंच कांदुल, रायपुर

सचिव - नव उजियारा सांस्कृतिक, साहित्यिक संस्था

रुचि - कला - साहित्य - संस्कृति

प्रकाशक अउ संपादक : अंजोर (छत्तीसगढ़ी मासिक पत्र)

लेखन/प्रकाशन: बरछाबारी, हरिभूमि, इतवारी, देशबंधु, अमृतसंदेश, प्रखर समाचार, सांध्य छत्तीसगढ़, पत्रिका, शाश्वत राष्ट्रबोध, छत्तीसगढ़ ध्वज, किसान वीर, नई कलम संग आने आने पत्र-पत्रिकाम।

❑ जयंत साहू
ग्राम- डूण्डा, पोस्ट- सेजबहार,
जिला / तह. रायपुर, छत्तीसगढ़
गोठबात नं. - 9826753304,

Email- : jayantsahu9@gmail.com
Blog : charichugli.blogspot.com
: jayantsahu.blogspot.com